परंतप

परंतप

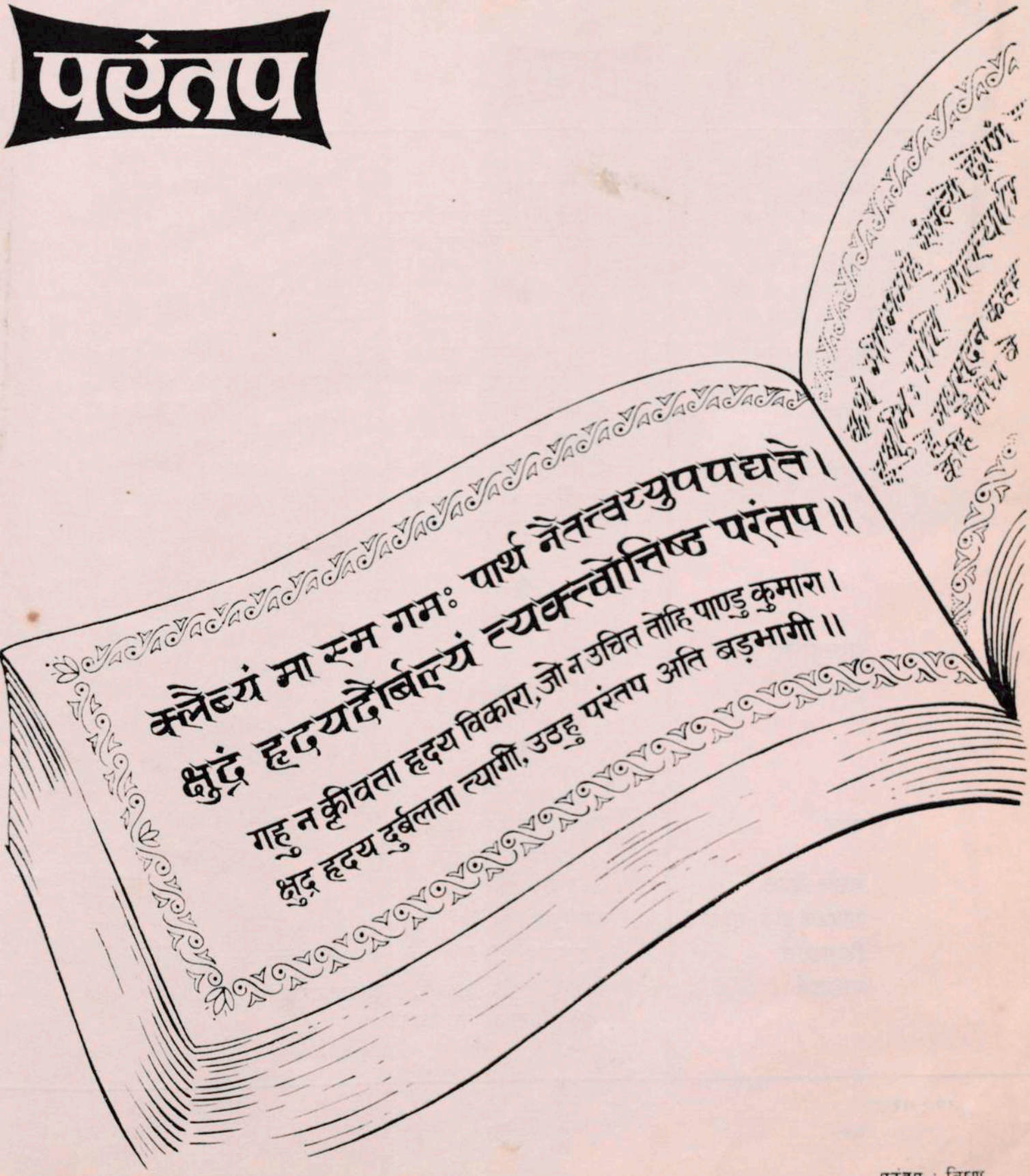

परंतप : विष्णु

परंतप

प्रकाशक	देशभक्त मोर्चा १५/९१ सिविल लाइन्स, कानपुर १८५, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
मुख्य संपादिका	श्रीमती माधवीलता शुक्ल एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत)
संपादक	श्री जयदेव शर्मा श्री एस० पी० मेहरा
सहयोगी	श्री ललन प्रसाद व्यास, दिल्ली श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी, दिल्ली श्री दवे प्रताप नागर, कानपुर
राज–संस्करण	१९७८
मूल्य	१०१.०० रुपया
मुद्रक	कृष्को प्रिन्टर्स एण्ड कार्टन मेकर्स, ९७/१८ कायस्थाना रोड, कानपुर
ब्लाक मेकर्स	ग्रैफिक इनग्रेवर्स, कानपुर
आवरण पृष्ठ–मुद्रक	रामजी प्रेस, कानपुर
डिजाइनर्स	दि कृष्णा पब्लिसिटी कम्पनी (प्रा०) लिमिटेड, कानपुर
बाइन्डर्स	श्री अब्दुल हमीद अन्सारी, सैयद इन्तजार हुसैन ९५/७८, अन्सार नगर, कानपुर

सावन की घटाएं.

सागर का तन
गागर का मन
स्वाती का जीवन
सब हैं तरसे तरसे
सब हैं प्यासे प्यासे
ये भीगे लोचन
किसको दे दूं ?

परंतप

शुभाकांक्षा
७–१०

वंश
१३–४४

व्यक्ति
४७–१०२

वेद : परंतप

अनुक्रम

पृष्ठ

आमुख • ५
लोकनायक जयप्रकाश नारायण • ७
राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी • ८
प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई • ९
रक्षामन्त्री जगजीवन राम • १०

चरणसिंह के पूर्वज • १३
दवे प्रताप नागर
राजनीति और प्रशासन • २०
जयदेव शर्मा
अन्तरङ्ग परिचय • २९
भास्कर
मेरे पिता • ३६
शारदा
प्रेरणा की धुरी—माताजी • ३८
मधुकर
अपराजेय • ४०
माधवी

उच्चादर्श और कर्मठता के प्रतीक • ४७
मुख्यमंत्री रामनरेश यादव
आदर्श-प्रशासक • ५०
केन्द्रीय राज्यमंत्री जगवीरसिंह
जैसा मैंने उन्हें पाया • ५२
रेलमन्त्री मधु दण्डवते
लौह-पुरुष • ५६
केन्द्रीय राज्यमंत्री नरसिंह यादव
कृषकों के हृदय-सम्राट् • ६०
केन्द्रीय राज्यमंत्री जगदम्बी प्रसाद यादव
दिल्ली में देहात का खामोश कदम • ६२
संसद् सदस्य श्यामनन्दन मिश्र
भविष्य की आशा • ६४
प्रो० बलराज मधोक
स्वच्छ प्रशासन की ओर • ६६
संसद् सदस्य यादवेन्द्र दत्त
प्राणशक्ति का तेजस्वी पुंज • ६७
संसद् सदस्य भगवतीचरण वर्मा

सामाजिक क्रांति के उद्घोषक • ७५
संसद् सदस्य ओमप्रकाश त्यागी
ग्रामीण जनता के हितैषी • ७६
संसद् सदस्य गौरीशंकर राय
एक महान पुरुष • ७७
संसद् सदस्य कुँवर महमूद अली खाँ
संकल्पों के धनी • ७९
डा० इतिजा हुसैन
युग–प्रवर्तक • ८२
कृषि मन्त्री उ० प्र०, राजेन्द्रसिंह
आत्म विश्वास के प्रतीक • ८४
राज्यमन्त्री उ० प्र०, अवधेशप्रसाद
किसानों के मसीहा • ८६
विधायक प्रो० कैलाशनाथसिंह
सशक्त व्यक्तित्व • ९०
आचार्य रमेशचन्द्र
निष्काम कर्मयोगी • ९२
रमाशंकर बाजपेई
इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व • ९५
धर्मवीर प्रेमी, एडवोकेट
मेरे आदर्श • १००
ससद् सदस्य मनोहरलाल

विचार

१०५–१५२

माननीय और मननीय • १०५
उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार
ठोस–आदमी • १०७
क्रान्तिदूत पं० परमानन्द
स्पष्ट-मत • १०९
कर्मवीर डा० सुन्दरलाल
अभिनव-गाँधी • ११०
मुख्यमन्त्री शान्ता कुमार
समर्थ राजनीतिक चिन्तक • ११२
डा० सोमनाथ शुक्ल
नेहरू बनाम चरणसिंह • ११७
सत्यपाल मलिक
आर्थिक व राजनीतिक विचारधारा • १२१
डा० गंगाधर अग्रवाल
आर्थिक विकास की नवीन प्राथमिकताएँ • १२६
डा० डी० एस० अवस्थी
कृषक नेता • १३२
संसद् सदस्य श्यामलाल यादव
चाणक्य से चरणसिंह तक • १३७
आचार्य जटाशंकर शास्त्री

विवेक

१५५–२०२

एक धवल व्यक्तित्व • १४२
विधायक राजेन्द्र चौधरी

आधुनिक चाणक्य • १४५
देवीदास आर्य

पटेल से चरणसिंह तक • १४७
लल्लन प्रसाद व्यास

एक ऐतिहासिक सिंहनाद • १५५
चौधरी चरणसिंह

एक अमूल्य भाषण • १८४
चौधरी चरणसिंह

राजनीतिक भ्रष्टाचार • १८८
चौधरी चरणसिंह

प्रश्नों के घेरे में चौधरी चरणसिंह • १९०
एक साक्षात्कार

विविध

२०५–२६०

चौधरी साहब के साथ तिहाड़ जेल में • २०५
पी० एन० सिंह

स्वतन्त्र भारत के गृहमन्त्री • २१३
क्रान्तिदूत लक्ष्मी कान्त शुक्ल

उन्हें कुछ करने दो • २१७
विद्याभास्कर, संपादक आज

चरितार्थ आदर्श • २१९
चन्द्रशेखर पण्डित

राष्ट्रीय-भावना और भाषा • २२१
श्रीमती कमला रत्नम्

मानस में रामराज्य की कल्पना • २२६
डा० सीताराम चतुर्वेदी

स्वामी विवेकानन्द की देन • २२९
संसद सदस्य डा० कर्णसिंह

चौधरी चरणसिंह—एक जातक • २३५
केदारनाथ मेहरोत्रा, एडवोकेट

देश की वर्तमान स्थिति और चौधरी चरणसिंह • २३९
नरेन्द्रमोहन, संपादक जागरण

नई आर्थिक नीति • २४२
सुरेन्द्र तिवारी

राष्ट्रीय नेतृत्व का आदर्श चरित्र • २५०
संसद सदस्य ज्वालाप्रसाद कुरील

कठोर—कोमल • २५३
संसद सदस्य शिवनन्दनसिंह

तमसो मा ज्योतिर्गमय • २५५
श्रीमती माया शुक्ल

जनतन्त्र के जनक • २५८
लक्ष्मीशंकर गुप्त

परंतप : ऋतु

वाणी

२९७–३१२

महान मानववादी • २६३
स्वास्थ्यमन्त्री राजनारायण

उर्दू क्योंकर पैदा हुई • २६६
मौलाना सैयद हुसेन शिबली नदवी

भ्रान्तियों के शिकार • २७२
विद्यासागर दीक्षित

लोकतन्त्र प्रशासन में आस्था : वर्तमान सन्दर्भ • २७६
वीरेन्द्र त्रिपाठी

विलय की व्यथा–कथा • २७९
इस्पात-खान मन्त्री, बीजू पटनायक

चौधरी चरण सिंह : मेरी नजर में • २८३
इश्हाक इल्मी, संपादक, सियासत जदीद

चित्रावली • २८७

जागे देश, हे लोकेश • २९७
गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्वप्न–रचना • २९८
भवानीप्रसाद मिश्र

मुर्दों से कैसे, हम समझौता करते • २९९
रामावतार त्यागी

मोह-भंग • ३००
रमारत्न शुक्ल

संकल्प • ३०२
अटल विहारी बाजपेई

आत्मीय–स्पर्श • ३०३
दिनकर सोंनवलकर

मोरपंखी • ३०४
उद्भ्रान्त

इन्कलाब का अग्रदूत • ३०५
नुशूर वाहिदी

पुराने सितम : नये साँचे • ३०६
फना निज़ामी

नई सिम्त • ३०७
पयाम फतेहपुरी

व्याकरण की मंजुमाला • ३०८
बागीश शास्त्री

ऐ चरणसिंह कलाम है तुझसे • ३१०
कृष्णदत्त 'तूफान' देहलवी

नूरपुर का नूर • ३११
सुधाकर

अभिलाषा • ३१२
ओमप्रकाशसिंह

जनता का तू नेता प्यारा • ३१२अ
जी० एस० 'मधुप'

VIGIL
315 to 363

VIEWS
366 to 428

English Section

- Charan Singh : Through Letters 315
- On Cooperative Farming 320
- On Collective Responsibility 322
- Text of Resolution 327
- Sampurnanand Exposed 329
- On Congress in-fighting 338
- On National Integration 343
- On Casteism and Jatpan 347
- Chinese Designs Forestalled 352
- Indira Gandhi Rebuffed 358
- Time for Fighting Emergency 363

- Towards Gandhi Ji
  Ch. Charan Singh 366
- Defections : What is the Way out ?
  Ch. Charan Singh 373
- The Dayanand Ardha Shatabdi at Ajmer
  Ch. Charan Singh 378
- Chaudhary Charan Singh As I Know him
  Radha Krishna Hooda 381
- Message is the Man
  Dr. L. M. Singhavi 383
- The Problems of Tribal People in Manipur
  Haokho Lal Thangjom 387
- Rural India He Knows
  Kuldip Nayar 391
- A Living Symbol
  Raj Krishna Dawn M.P. 391
- Greatness of Sardar
  Ch. Charan Singh 392
- The Changing Role of the Police in India
  Ch. Charan Singh 394
- Charan Singh : An Assessment
  Sitanshu Dass 399
- Bapu on Village Conditions 401
- Bapu on Prohibition 403
- Pictorial Pages 405
- देशभक्त मोर्चा : एक परिचय 421

आमुख

कुरुक्षेत्र के समराङ्गण में अजेय शूरवीर, महाप्रतापी योद्धा, धनुर्धर अर्जुन, जब मोह के महत् सागर में निमग्न, किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठे, तो भगवान् श्रीकृष्ण ने एक ओजस्वी सम्बोधन का प्रयोग किया–'**परंतप**' (परान् तापयति यः सः **परंतपः**) हे शत्रुओं को ताप देने वाले ! कौन थे यह शत्रु ? क्या अर्जुन के मन में व्याप्त सहज स्वाभाविक दुर्बलता, उसकी परस्पर विरोधी चित्त-वृत्तियाँ अथवा सम्पूर्ण कौरव समुदाय ? इसका उत्तर देता है भारत का वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक वायुमण्डल, जो महाभारत-युग की पुनरावृत्ति में तल्लीन है ।

अजातशत्रु भारत की स्वर्गतुल्य देह–श्री में जल-सर्पिणियों की तरह आबद्ध रक्तपिपासु यह शत्रु हैं अनास्था, अनैतिकता और असमानता; दरिद्रता, भ्रष्टाचार और पदलोलुपता; व्यक्तिगत स्वार्थ, राजनीतिक दाँवपेंच और शुद्धतम् चरित्र-हत्या; शृङ्खला बहुत लम्बी है । इन समस्त शत्रुओं को पीड़ित और परास्त करने का साहस किसमें है ? क्षमता किसमें है ? प्रश्न उठते ही प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि निर्विवाद रूप से परम सात्विक व्यक्तित्व, निष्कलंक चरित्र, कुरुक्षेत्र की माटी में जन्मे, पले और बढ़े चौधरी चरणसिंह पर टिक जाती है । हर मानवगत दुर्बलता के वह स्वयं उत्तर हैं । उच्छृंखल मनों को श्रेष्ठता से नियन्त्रित करने में पूर्णतः समर्थ हैं ।

परंतप—अनगिनत विरोधों के बीच निस्पृह, निर्भय, निर्विकार, अनेकानेक शत्रुओं के कठिन प्रहार को झेलने में सक्षम, राजनीतिक-सामाजिक एवं मानसिक शत्रुओं को उत्पीड़ित करने में समर्थ, अडिग, अशंक आदर्श-चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़प्रतिज्ञ व्यक्ति के प्रति एक सबल सार्थक सम्बोधन है ।

विस्थापित अधिनायकवाद, सुगठित लोकतन्त्र के समक्ष सीना तानकर खड़े होने की दुष्चेष्टा कर रहा है । फलतः एक नवीन उग्रता, सभ्यता और संस्कृति को पदाक्रान्त करने का षड्यन्त्र रच रही है । सरल-शुभ-आदर्श, प्राञ्जल अर्थव्यवस्था, राष्ट्र का उच्चादर्श, एक व्यापक अविश्वास, सुनियोजित अराजकता, घृणित विप्लव के प्रबल आलोड़न में पड़कर क्षीण शक्ति हो रहे

हैं। भ्रमों के महाजाल में जन्में आधुनिक मस्तिष्क किसी एक दिशा में स्थिरता से काम करने को उद्यत नहीं हैं। भविष्य अस्पष्ट है। विचारों का विस्तार हो रहा है। विश्रृंखलता तीव्रता से बढ़ रही है। अनगिनत दुर्बल मस्तिष्क, क्षीण बुद्धियुक्त व्यक्तियों के बीच कतिपय विचारवान, अति सहिष्णु, अति श्रेष्ठ व्यक्ति ही नवीन उत्थान, नवविहान का साथ दे रहे हैं।

परंतप—सात्विक ज्योति के अनन्य अनुचर, सत्य के पक्षधर, राष्ट्रनिष्ठा के प्रतीक, भविष्य द्रष्टा, लोकतन्त्र के पोषक, अतुलित ज्ञानपुंज, सशक्त व्यक्ति के प्रति क्षुद्र-मानव-मन का सहज विश्वास है।

परिग्रह की व्याधि बढ़ जाने के कारण, प्रत्येक आगन्तुक प्रश्न को नवीन समस्या एवं प्रत्येक विचार को अपना दिव्य सन्देश घोषित करने की महत्वाकाँक्षा ने मनुष्य को अपने पूर्वजों के प्रति अनुदार बनाकर कृतघ्नता का कपटाचरण करने की अनुमति दी है। अतः वह पूर्वजों की चिरकाल-व्यापी उद्योग शक्ति को समेटने में असमर्थ क्षीणता की ओर बढ़ रहा है।

परंतप—युग की गोद में श्रेष्ठता से प्रतिष्ठित उद्योगी पुरुषसिंह श्री चरण सिंह की नीतियों, रीतियों और भावनाओं को सहजता से अंजोरने की शाल-युक्त प्रक्रिया है।

सत् के प्रति आग्रह समाज में आदर्श-चरित्र को जन्म देता है और यह आदर्शवाद वीर-प्रजा की प्रकृति पर प्रतिष्ठित होकर महत् चरित्रों का आविर्भाव करता है, किन्तु स्वार्थ की तुला पर सर्वस्व तोलने की तत्परता ने समाज के सुन्दर स्वरूप को विघटित करने का श्रीगणेश किया है। जिसका सबसे अधिक प्रभाव देश की राजनीति पर पड़ा है। दूध-सी उजली और गंगा-जल सी पवित्र राजनीति के दर्शन दुर्लभ हो चुके हैं। सम्पूर्ण देश स्वार्थपरता, पदलोलुपता, निरंकुशता के असंयमित वातावरण में निरुद्देश्य भटक रहा है।

परंतप—इस भयावह वातावरण में निर्लिप्त भाव से राजनीतिक आचरण को शुद्धता और सात्विकता की ओर उन्मुख कर, मानव-मस्तिष्क को नयी गति, नयी लय, नयी शक्ति सौंपने वाले महामानव के सबल हाथों में सरल सुबोध समर्पण है।

एक-एक मणि जब अपना अन्तर मन एक सशक्त सूत्र को अत्यन्त उदार होकर तन्मयता से सौंपती है, तब एक सुन्दर, श्रीयुक्त, समृद्धशाली माला का निर्माण होता है। एक-एक लघु ईंट भव्य-भवन का स्वप्न साकार करती है। एक-एक बूँद के सतत् संयोग से रीती गागर आमुख आपूरित हो जाती है। राष्ट्र-निर्माण के पथ पर एक-एक व्यक्ति का अमूल्य सहयोग उत्कृष्ट उद्देश्यों का पूरक होता है।

परंतप—युग के महान् द्रष्टा, विचारक, सन्त, सेनानी, राजनेताओं, मनाषियों, कवियों, साहित्यकारों और पत्रकारों के अकथ सहयोग, अपूर्व मनोयोग की अनुपम छटा है।

जय प्रकाश नारायन
Jaya Prakash Narayan

कदम कुआँ * पटना ८०० ००३ * बिहार भारत

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि कुछ मित्रों ने चौधरी चरण सिंह जी को अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित करने का निश्चय किया है। चौधरी साहब उन थोड़े से नेताओं में हैं जिनका संबंध जमीन से रहा है। वे भारतीय किसानों के सच्चे प्रतिनिधि हैं। केन्द्रीय शासन में पहुँचकर उन्होंने सत्ता का रुख शहर से गाँव की ओर मोड़ने का प्रयास किया है। स्वराज्य के तीस साल बाद भी भारत का गाँव आज उपेक्षित है। सत्ता का केन्द्र आज भी शहर बना हुआ है। इस स्थिति को बदले बिना उस भारत का जो गाँवों में बसता है, कल्याण नहीं हो सकता।

चौधरी साहब की योग्यता, कर्मठता और ईमानदारी में मुझे भरोसा है। मैं हृदय से उनका अभिनन्दन करता हूँ।

अभिनन्दन - ग्रन्थ के आयोजकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पटना,
१७-१-७८

(जयप्रकाश नारायण)

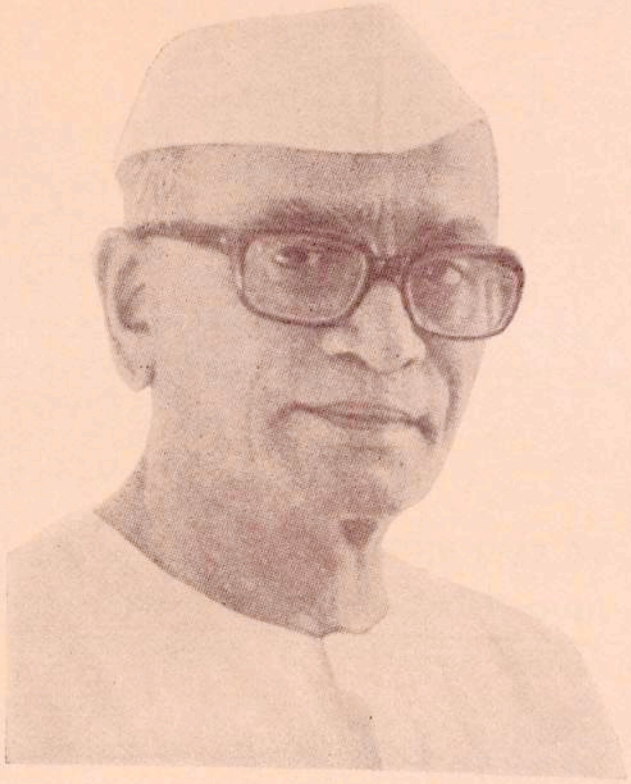

राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली-११०००४
RASHTRAPATI BHAVAN NEW DELHI-110004
INDIA

March 15, 1978

I am glad to know that the Deshbhakta Morcha, Kanpur, is bringing out a book on my esteemed friend, Shri Charan Singh in recognition and appreciation of his meritorious services to the people and the country.

I join his numerous friends and admirers in offering him my felicitations and good wishes.

(N. SANJIVA REDDY)

प्रधान मंत्री, भारत

नई दिल्ली,
दिनांक १२ अप्रैल, १९७८

चौधरी चरण सिंह जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पुस्तक सरसरी तौर पर मैंने देखी है। इसमें उनके जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, यह प्रसन्नता की बात है। चौधरी साहब एक व्यवहार-कुशल व्यक्ति और निर्भीक राष्ट्रवादी हैं। उनका वैयक्तिक जीवन सादगी और ग्रामीण जनता के प्रति सहानुभूति से संपन्न है। वे गहरी निष्ठा से मानते हैं कि जब तक देहातों में रहने वालों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक सवाल नहीं सुलझाये जायेंगे और वहाँ के लोगों का जीवन खुशहाल नहीं बनेगा, तब तक देश जैसा ऊँचा उठना चाहिए वैसा नहीं उठेगा। इस तरह गाँधी जी के सिद्धांतों पर आधारित नई समाज-रचना बनाने के काम में वे हमेशा प्रयत्नशील रहें हैं। चौधरी साहब के बारे में लेख लिखना मेरे लिए संभव नहीं हुआ, लेकिन इस पुस्तक की सलफता की मैं अवश्य कामना करता हूँ।

शुभेच्छा सहित

मोरारजी देसाई

रक्षा मंत्री, भारत

नई दिल्ली,
दिनांक ७ अप्रैल, १९७८

जनता पार्टी "भिन्न-भिन्न विचारधारा रखने वाले राजनीतिक दलों" का समन्वय है। इसको समन्वित करने में चौधरी चरण सिंह का महत्वपूर्ण अशंदान रहा है। चौधरी चरण सिंह जनता पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में से हैं और प्रशासन में इनकी वरिष्ठ भूमिका समझी जाती है। "देशभक्त मोर्चा" देश के वरिष्ठ नेताओं का अभिनन्दन करता रहा है। अब चौधरी चरण सिंह के सम्मान में एक अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित करके मोर्चा अपनी परम्परा में एक कड़ी और जोड़ रहा है। आशा है, अभिनन्दन-ग्रन्थ में चौधरी चरण सिंह की जीवनी और समाज और देश के प्रति इनके द्वारा की गई सेवाओं का उल्लेख होगा। चौधरी साहब दीर्घायु हों और देश और समाज का मार्ग-दर्शन करते रहें तथा अभिनन्दन-ग्रन्थ जनोपयोगी सिद्ध हो।

(जगजीवन राम)

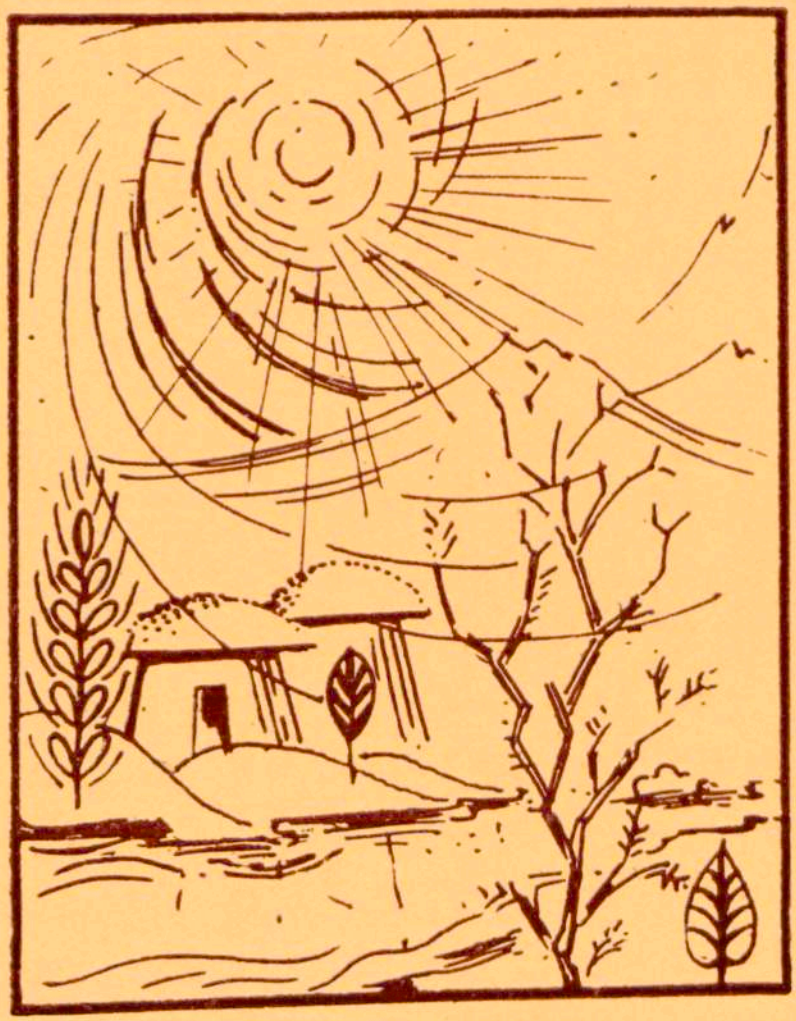

वंश

चरण सिंह के पूर्वज

□ दवे प्रताप नागर

चौधरी चरणसिंह के पूर्वज बल्लभगढ़ के थे। बल्लभगढ़ का नाम सामने आते ही याद आ जाती है बल्लभगढ़ के उन रण-बाँकुरों की आश्चर्य चकित कर देने वाली गौरव-गाथा, जिनकी पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों ने स्वतन्त्रता के हर संग्राम में आगे से आगे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और देश की आन-बान-शान की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग के एक से एक बढ़ कर आदर्श प्रस्तुत किये। चौधरी चरण सिंह की धमनियों में उन वैभवशाली योद्धाओं का रक्त प्रवाहित है जो न कभी अधिकार खो कर जिये और न जिन्होंने कभी अन्याय और अत्याचार के सामने घुटने टेके, वे जूझ गए पर टूटे नहीं।

चौधरी चरणसिंह के व्यक्तित्व में जो पौरुष है, जो दुर्धर्षता है, दृढ़ता है और उनके स्वभाव में जो जुझारूपन है, वह उनके पूर्वजों की देन है, जिन्होंने कभी किसी अत्याचारी शासन को न तो बर्दाश्त किया और न स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरुपयोग किया। उन्होंने अपने बाहुबल से अपने समाज को मुगलों की अधीनता से मुक्त करा कर राजा नाहरसिंह के नेतृत्व में बल्लभगढ़ राज्य की नींव डाली थी। भारत के राजनीतिक मानचित्र में बल्लभगढ़ जो कभी तँवत्य शासकों की राजधानी थी, आज हरियाणा प्रान्त के गुड़गाँव जिले का एक ऐतिहासिक नगर है। धरती के जो अमर पूत होते हैं, उनकी पृष्ठभूमि भी असाधारण होती है। चौधरी चरणसिंह भी उन भाग्यशाली पुरुषों में हैं, जिन्हें विरासत में असाधारणता मिली है। इस विरासत को समझने के लिए बल्लभगढ़ राज्य के इतिहास के उन अध्यायों को पढ़ना पड़ेगा, जिनकी रचना चौधरी साहब के पूर्वजों ने हजारों देशभक्त सैनिकों के साथ मिलकर अपने खून से की है।

बल्लभगढ़ में तँवत्य राज्य के जन्मदाता राजा नाहरसिंह सन् १८५७ में भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के उन महान सेनानियों में अग्रणी थे; जिन्होंने विदेशी शासन के खिलाफ बगावत का झण्डा गाड़ा था और वीर गति पायी थी। फिरंगियों को छकाने वाली उनकी बहादुरी के हैरतअंगेज कारनामें हरियाणा और दिल्ली के आस-पास के इलाकों के बड़े-बूढ़े आज भी बड़े गर्व के साथ सुनते सुनाते हैं। राजा नाहरसिंह के दरबार-महल में स्थित बल्लभगढ़ के खजाने को देखने आज भी हजारों लोग आते हैं और उस महान योद्धा के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं, जिसने कभी हरियाणा से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंका था।

बल्लभगढ़ का इतिहास

बल्लभगढ़ के संस्थापक राजा बलरामसिंह के पितामह गोपालसिंह तँवत्य सन् १७०५ में अपने कुछ जाँनिसार साथियों के साथ फरीदाबाद के निकट सीही नामक ग्राम में आकर बस गए थे। उन्होंने इस क्षेत्र के महाजनों और जमींदारों को लूट कर सारे इलाके में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। सन् १७०७ में मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु से मुगल सल्तनत के छिन्न-भिन्न होने के लक्षण स्पष्ट परिलक्षित

होने लगे थे। फरीदाबाद में मुगल दरबार के प्रतिनिधि के रूप में मुर्तजा खाँ उस समय प्रशासक नियुक्त हुआ था। गोपालसिंह की योग्यता और संगठन-क्षमता से प्रभावित होकर मुर्तजा खाँ ने उन्हें परगने की मालगुजारी वसूल करने का कार्य भार सौंपा। गोपालसिंह को इस वसूली में एक आना प्रति रुपया की दर से कमीशन प्राप्त होता था। आगे चल कर, गोपालसिंह की कोई सन्तान न होने के कारण उनके भाई बेचनसिंह के पुत्र चरनदास ने इस कार्य भार को सँभाला। चरनदास साधु स्वभाव के थे और उनका जीवन समाज को सुधारने में समर्पित हो गया। अधिकाँश समय वे पूजा पाठ में बिताते थे और अपनी आय, निर्धन तथा आवश्यकताग्रस्त परिवारों को दान के रूप में बाँट देते थे। एक ऐसा भी समय आया कि निर्धारित तिथि को मुगल खजाने में वे मालगुजारी न जमा कर सके और कारागार के सीखचों में उन्हें बन्द कर दिया गया, किन्तु उनके पुत्र बलरामसिंह ने ऐसी युक्ति निकाली जिसके द्वारा उसने थैलियों के नीचे ताँबे के सिक्के भर कर ऊपर से सोने के सिक्के बिछा दिए और मुगल-खजाँची को सौंप कर अपने पिता को छुड़ाकर भरतपुर भाग गया जहां उसे राजा सूरजमल के यहाँ शरण मिली। राजा सूरजमल ने अपना व्यक्तिगत प्रभाव डालकर बलरामसिंह को जागीर के रूप में पाँच गाँव सीही, भुजे, लोहागढ़, मुजहदी और मिर्जापुर मुर्तजा खाँ से दिलवा दिये। समय ने करवट ली और बलरामसिंह ने फरीदाबाद पर आक्रमण कर मुर्तजा खाँ का काम तमाम कर दिया तथा ग्यारह गाँव अपनी जागीर में सम्मिलित कर लिए। पाली का जागीरदार भी बलरामसिंह के हाथों पराजित हो गया और उसके इक्कीस गाँव तैवत्य-जागीर में मिल गये, जिससे बलराम सिंह की शक्ति बहुत बढ़ गई। उसने सिकन्दराबाद के नवाब पर भी चढ़ाई बोल दी तथा उसके अट्ठासी गाँवों पर कब्जा कर लिया। उसने पलवल के नवाब को हरा कर उसकी रियासत के अटठ्ानवे गाँव अपनीं जागीर में मिला लिए और इस प्रकार दो सौ दस गाँवों पर कब्जा करने के पश्चात बलरामसिंह ने अपने को स्वयं महाराजा घोषित कर दिया और बल्लभगढ़ में किले का निर्माण कराया। राजा बलरामसिंह केवल विजयी योद्धा ही नहीं वरन् एक कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने भरतपुर राज्य के प्रमुख दरबारी, होडल के मुखिया की सुन्दरी पुत्री किशोरी के साथ विवाह किया ताकि भरतपुर राज्य से उनकी मैत्री प्रगाढ़ हो सके। राजा बलरामसिंह ने अपने यशस्वी जीवन में अनेकानेक लड़ाइयाँ लड़ीं और अन्त में दिल्ली के लाल-किले पर अपने जीवन की आखिरी लड़ाई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। भारतीय इतिहास में उनके अनोखे बलिदान की गाथा अद्वितीय है। भरतपुर के राजा सूरजमल को नाजिबखाँ ने धोखा देकर सुलह के बहाने बुलाया और २५दिसम्बर सन् १७६३ को दिल्ली की सरहद पर निर्दयतापूर्वक उनका वध कर दिया। महारानी रूपकौर अपने पति की हत्या का बदला लेने का आग्रह करने के लिए अपने भाई राजा बलरामसिंह और दत्तक पुत्र जवाहरसिंह के पास गईं। दो वर्ष तक इन शासकों ने सेनाओं को संगठित किया और दिल्ली पर आक्रमण करने की योजना बनाते रहे। अक्टूबर सन् १७६५ में इन सेनाओं ने दिल्ली की ओर कूच किया। नाजिब खाँ की फौज के पाँव उखड़ गए और दिल्ली के लाल किले में भागकर उसने पनाह ली। लाल किले का दरवाजा लोहे की नुकीली कीलों से जड़ा हुआ था जिसे मुगल सम्राट अकबर ने चित्तौड़ किले से लाकर विशेष रूप से लगवाया था। इस नुकीले फाटक पर धक्का देने के लिए कोई भी हाथी आगे नहीं बढ़ता था। समय थोड़ा था और बलरामसिंह की सेना असहायता अनुभव करने लगी। इसी समय राजा बलरामसिंह दरवाजे के सामने कीलों को ढक कर खड़े हो गए और उन्होंने उच्च स्वर में जवाहरसिंह को आदेश दिया कि हाथियों को आगे बढ़ाओ—अब वे नुकीले कीलों से भयभीत नहीं होंगे और उनके दबाव से फाटक टूट जायेगा। जवाहर सिंह को काटो तो खून नहीं। भला वे अपने चाचा को इस प्रकार मरते कैसे देख सकते थे और उन्होंने निश्चय किया कि हार हो या जीत, वे ऐसा अपराध कभी नहीं करेंगे। वीरोचित स्वाभिमान से भरे राजा बलरामसिंह गरजे—"जवाहर सिंह, कायर मत बनो, एक बहादुर योद्धा की भाँति अपने कर्त्तव्य का पालन करो, युद्ध के मैदान में जीना मरना कोई महत्त्व नहीं रखता" और हाथी चल पड़े। जवाहरसिंह ने हाथी को हाँका। क्रुद्ध हाथी ने उस वीर तैवत्य सैनिक को टक्कर मारी और किले का द्वार चरमरा उठा। युद्ध में विजय-श्री प्राप्त हुई। किले के अन्दर अनेक रोहिले सैनिक मारे गए। नाजिब खाँ को कैद कर लिया गया और नुकीली कीलों का जड़ा हुआ वह फाटक भरतपुर ले आया गया जहाँ भरतपुर के किले में आज भी वह सुरक्षित है।

बल्लभगढ़ के शासकों में राजा बलरामसिंह से लेकर राजा नाहरसिंह तक कोई राज्याधिकारी इतना सशक्त और महत्त्वपूर्ण नहीं हुआ जितने कि राजा नाहरसिंह; जिन्होंने सन् १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में जिसे इतिहासकारों ने 'गदर' की संज्ञा दी है, अपने प्राणों की आहुति देने वाले अनेक देशभक्तों के जीवन वृत्त के विषय में अधिक जानकारी एकत्रित कर पाना बहुत कठिन है। इसका कारण यह है कि अंग्रेज शासकों ने इन महान सपूतों के कीर्ति कौशल को सुरक्षित करने के समस्त साधन ध्वस्त कर दिए थे और देशभक्त भारतीय सेनाओं की शौर्य-गाथायें उनके विनष्ट होने के साथ-साथ काल के गर्त में विलीन हो गयीं। सत्य तो यह है कि इस युद्ध की प्रतिक्रिया स्वरूप अंग्रेज शासकों के दमन एवं अत्याचार के भय से इन पराजित देशभक्तों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने का किसी में साहस भी शेष नहीं रहा और मातृभूमि की स्वतन्त्रता पर अपने प्राणों को होम करने वाले इन बलिदानियों के उच्चतम त्याग से सम्बन्धित दस्तावेजों को कोई अपने पास सुरक्षित नहीं रख सका। यही कारण है कि राजा नाहरसिंह के विषय में अतीत या आधुनिक इतिहास के पृष्ठों में बहुत कम सामग्री उपलब्ध है किन्तु तँवत्य-वंश के चारणों के वंशजों के पास जो तथ्य उपलब्ध हैं, उनसे सिद्ध होता है कि राजा नाहरसिंह उन देशभक्तों में से थे जिन्होंने सन् १८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध की योजना बनाई थी और उसे संचालित किया था। उपलब्ध सामग्री के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मेरठ जिले में स्थित गढ़मुक्तेश्वर में नवम्बर सन् १८५६ में एक गुप्त बैठक आयोजित की गई थी जिसमें भारत से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की एक विस्तृत योजना बनाई गई थी। इस गुप्त बैठक में तात्या टोपे, रेवाड़ी के राव किशन गोपाल, मंगल पाण्डे, राजा नाहरसिंह और महाराजा ग्वालियर के साथ अनेक देशभक्तों ने भाग लिया था। इस बैठक के कुछ ही दिन बाद मेरठ के शिव मन्दिर में भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक और बैठक बुलायी गई थी।

ऐसी जन-श्रुति है कि उत्तर भारत की कतिपय सैनिक छावनियों में तथा अन्य जागीरदारों के मध्य 'विद्रोह' के पूर्व फरवरी, मार्च १८५७ में जो रहस्यपूर्ण चपातियाँ वितरित की गई थीं, उसमें राजा नाहरसिंह के गुप्तचरों का प्रमुख हाथ था। चपाती में एक गुप्त सन्देश निहित था जिसमें विद्रोह का दिन तथा समय निर्धारित किया गया था। दुर्भाग्यवश सभी स्थलों पर इस योजना के अनुसार विद्रोह का बिगुल न बज सका। २९ मार्च सन् १८५७ को मंगल पाण्डे ने मेरठ छावनी में विद्रोह की पहली गोली दागकर धमाका कर दिया और वह गिरफ्तार कर लिया गया। ८ अप्रैल को उसे बैरकपुर छावनी में फाँसी के फन्दे पर लटका दिया गया। १० मई सन् १८५७ को मेरठ में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी और सैनिकों ने अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर से नेतृत्व करने के लिए आग्रह किया और सम्पूर्ण उत्तर भारत अंग्रेजों के विरुद्ध एक सूत्र में बँध कर उठ खड़ा हुआ। दिल्ली के चारों ओर विद्रोह की लपटें फैल गईं और हरियाणा में राजा नाहरसिंह इस विद्रोह के अग्रदूत बन गए। राजा नाहरसिंह ने इस क्षेत्र के देशभक्त रण-बाँकुरों का एक मोर्चा बनाया जिसमें झाझर के नवाब अब्दुल रहमान खाँ, मेवाड़ के राव शहमत खाँ और रेवाड़ी के राव किशनगोपाल भी सम्मिलित थे। इन देशभक्त सेनाओं की चार टुकड़ियाँ बनीं जिनका नेतृत्व राव किशन गोपाल, पृथ्वीसिंह, गुलाबसिंह सैनी और ठाकुर भोरेसिंह ने किया। दिल्ली का पतन होते ही मेरठ से दिल्ली की ओर कूच करती ब्रिटिश सेनाओं को रोकने के लिए राजा नाहरसिंह अपनी सेना के साथ आगे बढ़े और हिंडन नदी के किनारे ब्रिटिश सेना को करारी मात दी। दूसरी मुठभेड़ ठाकुर भोरे सिंह के साथ पलवल में हुई जहाँ भारतीय सेनाओं ने अंग्रेज सैनिकों की टुकड़ियों के दाँत खट्टे कर दिए। सेना-नायक पृथ्वीसिंह ने हसनपुर में और राव किशनगोपाल ने नारनौल के निकट नसीबपुर में भारतीय सेनाओं का बहादुरी के साथ नेतृत्व किया। राव किशनगोपाल के हाथों पराजित हो रही ब्रिटिश सेना को सहसा कपूरथला और पटियाला के सैनिकों की सहायता मिल गई और राव किशनगोपाल तथा उनके भाई राव रामलाल शहीद हो गए और भारतीय सेना को यहाँ से पलायन करना पड़ा।

राजा नाहर सिंह एक अजेय योद्धा थे। उन्हें बस में लाना अंग्रेजों के बस की बात नहीं थी, इसलिए अंग्रेजी शासकों ने एक नीचतापूर्ण जाल बिछाया। बहादुर शाह जफर के नाम से एक जाली पत्र राजा नाहर सिंह को भेजा

गया जिसमें उन्हें मुगल सम्राट और अंग्रेजों के बीच हुए एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए दिल्ली आमन्त्रित किया गया । राजा नाहर सिंह अपने तीन सेनानायकों भोरे सिंह, पृथ्वी सिंह और गुलाब सिंह के साथ दो सौ सवार लेकर दिल्ली चल पड़े और रास्ते में ही निजामुद्दीन के निकट अंग्रेज सेनाओं ने कायरतापूर्ण आक्रमण कर दिया और भयंकर युद्ध के पश्चात उनके अनेक साथी मारे गये, और वे स्वयं घायल हो गए । उनका घोड़ा मर चुका था किन्तु वे दिल्ली की ओर बढ़ते रहे, अंग्रेजों ने उनका पीछा किया और दिल्ली दरवाजे के पास उन्हें अंग्रेज सैनिकों ने गोली चलाकर घायल कर दिया । ३ सितम्बर सन् १८५७ को अंग्रेजों द्वारा राजा नाहरसिंह बन्दी बना लिए गए और इन्हें 'मेटकाफ हाउस' में नजरबन्द रखा गया । २० सितम्बर को हुमायूँ के मकबरे में मुगल सम्राट बहादुर शाह अंग्रेजों के हाथ पड़ गए और उन्हें आत्म समर्पण करने के लिए विवश होना पड़ा । इस भांति मातृभूमि को स्वतन्त्र करने का देशभक्तों का महान स्वप्न वायु-मण्डल में धुआँ बनकर विलीन हो गया ।

अंग्रेजों द्वारा इस विद्रोह को पूरी तरह कुचल देने के पश्चात आतंक और दमन का लोमहर्षक दौर शुरू हुआ । मृत्यु समस्त भयावहता के साथ चारो ओर नग्न तांडव करने लगी । इतिहास में दुर्लभ बेमिसाल हत्याओं के साथ देशभक्त नागरिकों पर घनघोर विपत्तियों और विपदाओं के पहाड़ टूट पड़े । निर्दोष नागरिक तोप के मुहाने पर रख कर भूने जाने लगे और उन्हें जबरन मिथ्या आरोप लगाकर फाँसी पर चढ़ा देना उस समय आम बात हो गयी थी । तैवत्य समर्थकों को तथा राजा नाहर सिंह के सहयोगियों तथा अन्तरंग साथियों को फाँसी की सजायें दे दी गयीं । नगली ग्राम के तीस व्यक्ति केवल इसलिए फाँसी पर चढ़ा दिए गए कि उन्होंने देशभक्तों को शरण दी थी । रामसुख सहित आठ देशभक्तों को फाँसी पर चढ़ाकर उनके शव गुड़गांव के उस स्थल पर पेड़ों पर लटका दिए गए जहाँ आज 'कमला नेहरू पार्क' बना है ताकि नागरिकों को आतंकित रखा जा सके । ब्रिटिश सैन्य-न्यायालय द्वारा राजा नाहरसिंह और झाझर के नवाब दोनों पर मुकदमा चलाया गया । जिस दिन राजा नाहरसिंह को फाँसी दी गई, उसी दिन दिल्ली कोतवाली के सामने असंख्य आजादी के दीवाने फाँसी पर लटका दिये गए थे । राजा नाहरसिंह के सत्रह निकटतम सहयोगी जिनमें सेना-नायक पृथ्वी सिंह, गुलाबसिंह और भूरेसिंह भी थे, प्रातः काल की बेला में फाँसी के तख्ते पर लटका दिये गये । राजा नाहरसिंह का शव अज्ञात स्थान पर दफनाया गया और झाझर के नवाब का शव एक गड्ढे में फेंक दिया गया ।

बल्लभगढ़ की शहीदों के खून से रँगी भूमि को अंग्रेजी शासन ने अपने साम्राज्य में मिला लिया और महल की तोपों से वे सब निशान मिटा डाले जो बलिदान की अमर गाथा गा रहे थे । महारानी किशन कौर और उनकी पुत्री बलवन्त कौर को जंगलों में भटकना पड़ा । महाराजा के अन्य सम्बन्धियों और तैवत्य परिवारों को बल्लभगढ़ छोड़-कर निकट के गाँवों में और दूर-दूर के स्थानों में जाकर शरण लेनी पड़ी । असंख्य प्राणों की आहुति देकर तैवत्य शरणार्थी बनकर भटकने लगे । इन्हीं परिवारों में, जिन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध अनवरत संघर्ष किया, दृढ़ता और निष्ठा से देशभक्ति के गीत गाए और अपना सर्वस्व राष्ट्रहित की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया उनमें चौधरी चरणसिंह के पूर्वज भी थे । अपना सब कुछ लुटाकर बल्लभगढ़ की माटी को प्रणाम कर, अपना स्वाभिमान, आदर्श और पुरातन जाज्वल्यमय इतिहास लेकर वे बुलन्दशहर जिले में स्थित भटौना गाँव में आकर बस गए और नई परिस्थितियों में अपना जीवन पुनः संभालने के लिए उद्यत हो गए । शरणार्थियों की घनी बस्ती होने के कारण सियामी नामक ग्राम में चौधरी चरणसिंह के पितामह बादामसिंह वर्षों तक निवास करते रहे । चौधरी बादामसिंह की पाँच सन्ताने थीं, सबसे बड़े पुत्र का नाम लखपतसिंह और सबसेछोटे का नाम चौधरी मीरसिंह था ।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में चौधरी मीरसिंह अपनी अठारह वर्ष की आयु में सपरिवार मेरठ जिले में नूरपुर नामक एक छोटे से गाँव में आकर बस गए और किसी प्रकार कुछ भूमि बटाई में मिल गई जिससे परिवार में कृषि उद्योग की परम्परा स्थापित हुई । चौधरी मीरसिंह ने कठोर परिश्रम और नियोजन द्वारा शीघ्र ही इस भूखण्ड को एक उर्वरा भूमि में परिवर्तित कर दिया और इस प्रकार उजड़ता हुआ शरणार्थी परिवार इस नये घर में बस कर मेहनत और कर्तव्यपरायणता से सम्पन्नता और समृद्धि के पथ पर

अग्रसर हुआ। नूरपुर नामक ग्राम में २३ दिसम्बर सन् १९०२ को चौधरी मीरसिंह को एक पुत्र जन्मा जो आज हमारे देश का कर्मठ नेता तथा केन्द्रीय सरकार का गृह-मन्त्री है।

चौधरी चरणसिंह की आयु छै वर्ष की भी नहीं हो पाई थी कि उनके परिवार में पुनः विपत्ति आ गई। परिवार के पास रहन भूमि बड़ी उर्वरा थी, इसी कारण उसका मूल्य भी अत्यधिक हो गया था। भूमि के स्वामी ने उस जमीन को बेच देने का निश्चय किया और मुँहमाँगे दाम माँगने लगा, जिसे न दे सकने की स्थिति में परिवार को वह भूमि लौटा देने के लिए विवश होना पड़ता। इतना अधिक धन देना सम्भव न था, भूस्वामी ने रहन वापस करने के लिए परिवार को उनका अंश सौंप दिया और चौधरी-परिवार पुनः एक बार संकटग्रस्त हो गया। चौधरी मीरसिंह हाथ पर हाथ धरकर बैठने वाले व्यक्ति न थे। वे भूमि की तलाश में गाँव से चल दिए और मेरठ जिले में भूपगढ़ी नामक ग्राम में कुछ एकड़ भूमि लेने में सफल हो गए। इस प्रकार सारा परिवार भूपगढ़ी में आकर रहने लगा। चौधरी मीरसिंह भूपगढ़ी में अपने परिवार के साथ बस गए और उनके अन्य भाई उसी जिले में भदौला नामक ग्राम में बस गए। यद्यपि इस नए ग्राम में उन्होंने शीघ्र ही कृषि द्वारा सामान्य स्थिति बना ली थी किन्तु अपने भाइयों और भतीजों से अलग-अलग रहना उन्हें खलने लगा। विशेष कर लखपतसिंह की इच्छा थी कि उनके भाई मीरसिंह और उनके पुत्र चरणसिंह भदौला ग्राम में आकर उन्हीं के साथ रहें। चौधरी लखपतसिंह का अपने भतीजे चरणसिंह के प्रति अत्यधिक लगाव था। अतएव चौदह वर्षों तक लगातार भूपगढ़ी में निवास करने के पश्चात चौधरी मीरसिंह सपरिवार भदौला में आकर बस गए और जीवन पर्यन्त वहीं पर निवास करते रहे।

चौधरी मीरसिंह की पाँच संताने – श्री चरणसिंह, राम देवी, श्यामसिंह, रिसालो और मानसिंह हैं। चौधरी मीरसिंह बड़े कल्पनाशील कृषक थे और कठोर परिश्रम करने में उनका पूरा विश्वास था। जीवन के अन्तिम दिन तक वे अपने पुत्रों से कुछ माँगने की अपेक्षा अपने खेतों की स्वयं व्यवस्था करते रहे और उसी से धनार्जन भी किया जिससे परिवार को आवश्यकीय जीवनोपयोगी सामग्री उपलब्ध होती रही। यद्यपि चौधरी मीरसिंह और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नेतो देवी की स्कूली शिक्षा नगण्य थी, किन्तु उन्होंने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा के लिए सदैव प्रेरित किया और उसके लिए साधन जुटाते रहे।

चौधरी मीरसिंह के चार बड़े भाई सर्वश्री लखपतसिंह बूटासिंह, गोपालसिंह और रघुबीरसिंह थे। इन पाँचों भाइयों की कुल मिलाकर पन्द्रह सन्ताने थीं। चौधरी बादाम सिंह के घराने के बीसो उत्तराधिकारी आपस में बड़े प्रेम और सौहार्द से रहते थे और पास-पड़ोस के क्षेत्र तथा अपने ग्राम में उनका बड़ा आदर सम्मान था। कृषि की ओर चौधरी परिवार की भूमिका प्रारम्भ से ही बड़ी महत्वपूर्ण रही है। सन् १९२० का दशक आर्थिक मन्दी का युग था। कृषि उत्पादनों के मूल्य उस जमाने में काफी गिर गये थे। गुड़ का भाव उस समय डेढ़ रुपया प्रति मन था जबकि सन् १९६७ में यह सौ रुपया प्रति मन हो गया था। किसानों की आर्थिक दशा निम्न स्तर की थी। अभाव गरीबी–कर्जा–बेगारी, यह सभी किसान परिवारों में व्याप्त था। उस समय केवल मेहनत के सहारे हाथों में हल लेकर इस परिवार ने न केवल अपनी जमीन सुरक्षित रखी बल्कि उसमें उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी भी की। एक उपजाऊ भूखण्ड उसी समय विक्रय के लिए उपलब्ध था जिसकी कीमत इक्कीस हजार रुपये आंकी गई। चौधरी परिवार के लिए भूमि अत्यन्त उपयोगी थी लेकिन अधिक मूल्य के कारण उसको क्रय करना सम्भव नहीं था अतएव येन-केन-प्रकारेण सात हजार रुपया एकत्र हो पाया और सात हजार रुपया नगद तथा बाकी धनराशि हेतु सम्पूर्ण भूमि का पट्टा उसी व्यक्ति के नाम रखने की युक्ति निकाल कर इस भूमि को चौधरी परिवार ने अपने लिये उपयोगी बनाया। इसी भूखण्ड में झोपड़ियाँ बना ली गईं और खेती के बीच रहकर अधिक सर्तकता और मेहनत से अल्प समय में ही बकाये रुपये का भुगतान भी कर दिया गया और सुख तथा समृद्धि के मार्ग पर यह परिवार पुनः गतिशील हुआ।

प्रारम्भिक जीवन

चौधरी चरणसिंह का शैशव नूरपुर में और बाल्यकाल

भूपगढ़ी में बीता। भूपगढ़ी में कोई विद्यालय नहीं था अतएव जानी ग्राम की प्राथमिक पाठशाला में उनकी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। प्रतिदिन जानी जाना और आना, खेत खलिहान देखना उनकी दैनन्दिनी थी। प्रारम्भ से ही वे बड़े शान्त प्रकृति के रहे हैं। उनकी कक्षा के दूसरे बालक जहाँ खेल-कूद और शरारत में समय बिताते थे वहीं बालक चरणसिंह कक्षा के एक कोने में बैठकर अपनी पुस्तकों में डूबे रहते थे। पाठशाला के अध्यापकों ने उन्हें सामान्य से कुछ अलग ही पाया और वे भविष्यवाणी किया करते थे कि यह बालक एक न एक दिन अवश्य ही अपनी प्रतिभा और चरित्र से उन्नति के उच्च शिखर पर आरूढ़ होगा। प्राथमिक कक्षायें उत्तीर्ण करने के पश्चात चरणसिंह ने मेरठ के गवर्नमेंट कालिज में भरती होकर सन् १९१९ में मैट्रिक तथा १९२१ में इन्टरमीडियेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षार्थी होने के साथ-साथ खेती से अपने लगाव को उन्होंने नहीं छोड़ा और पारिवारिक खेती के कार्य में कठोर श्रम करते तथा पशुओं के लिए चारा काटते थे। स्कूल कालेज के दिनों में ही उन्हें झूलें तथा कबड्डी का बड़ा शौक रहा है और स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए वे खेल-कूद की उपयोगिता को बहुत महत्व देते थे।

इन्टरमीडिएट की परीक्षा में सफल हो जाने के पश्चात डिग्री कक्षाओं की पढ़ाई में चरणसिंह को भेजना चौधरी मीरसिंह के सीमित साधनों द्वारा सम्भव नहीं था, लेकिन चरणसिंह का उच्च शिक्षा के प्रति विशेष आकर्षण और लालसा थी, अतः पिता के इस निर्णय से कि अब वे आगे न पढ़ें, उन्हें बड़ी निराशा हुई और वे उदास रहने लगे किन्तु आज्ञाकारी और पितामक्त होने के कारण उन्होंने कोई हठ नहीं किया। बालक चरणसिंह की विद्याध्ययन की ओर विशेष रुचि, निष्ठा और लगन की चर्चा पास-पड़ोस के गाँवों तक फैली हुई थी और जब चौधरी मीरसिंह के बड़े भाई चौधरी लखपतसिंह को यह ज्ञात हुआ कि आर्थिक कठिनाई के कारण अब बालक चरणसिंह की आगे शिक्षा नहीं हो पायेगी तो उन्होंने एक दिन चरणसिंह को बुलाकर कहा 'जरा भी चिन्ता न करो, तुम्हें जितना धन चाहिये, मुझसे ले लो मगर अपनी पढ़ाई बन्द न करना!' अपने चाचा के आश्वासन और निर्देशन से चरणसिंह आगरा उच्च शिक्षा के लिये भेज दिए गए। सन् १९२३ में चरणसिंह ने विज्ञान में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। मेधावी और तीक्ष्ण बुद्धि होने के नाते उन्होंने एम. ए. तथा विधि की दोनों कक्षाओं में एक साथ प्रवेश लिया और सन् १९२५ में उन्होंने इतिहास विषय में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसी वर्ष सन् १९२५ में हरियाणा प्रदेश की एक तहसील सोनीपत निवासी श्री गंगा राम जो गढ़ी कुन्डल ग्राम में रहते थे, उनकी सुपुत्री गायत्री देवी के साथ उनका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। श्रीमती गायत्री देवी के पिता खेती-बारी करते थे, अच्छे कृषक थे, स्वयं हल चलाते थे, श्रम की पूजा करते थे। इस प्रकार दो किसान परिवार दाम्पत्य सूत्र बन्धन में बँध गए।

सन् १९२६ में युवा चरणसिंह ने कानून की डिग्री हासिल की और जीविकोपार्जन के लिए वकालत का पेशा अपनाया तथा गाजियाबाद को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। सफलतापूर्वक वकालत करते हुए भी युवा चरण सिंह को राष्ट्र की सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियाँ अपनी ओर आकृष्ट करने लगीं। सन १९२१ के असहयोग आन्दोलन के पश्चात राजनीतिक क्षितिज पर महात्मा गांधी का प्रकाश पुंज जाज्वल्यमान हो रहा था। सारे देश की युवा शक्ति राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए व्याकुल विह्वल थी। एक ओर क्रान्तिकारियों ने अपने बलिदान से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की तो दूसरी ओर महात्मा गांधी की अहिंसा के मन्त्र ने नव जागरण का सन्देश दिया। युवा चरणसिंह की पारिवारिक परम्पराओं ने, उनमें अदम्य साहस एवं हँसते-हँसते कठिनाइयों और आपदाओं का सामना करने की शक्ति धरोहर के रूप में सौंपी थी। उन्होंने गान्धी जी से प्रेरणा ली और नमक सत्याग्रह में पहली बार शामिल हुए और जेल की चहारदीवारी में बन्द कर दिए गए। गान्धीजी के आदर्श-अहिंसक क्रान्ति, समाज सुधार, हरिजन उद्धार, सत्याग्रह, त्याग, बलिदान, आत्म संयम और सादगी, देशी वस्तुओं का प्रयोग और खादी को जीवन का अंग बनाना, मद्य-निषेध ये सभी ऐसे आधारभूत सिद्धान्त थे, जिन्हें युवा चरणसिंह ने अपने जीवन के आदर्शों के निकट पाया था, इसलिए वे पूरी शक्ति के साथ मनसा-वाचा-कर्मणा उन्हें अपने संस्कारों में ढाल कर राजनीतिक दिशा में आगे बढ़े।

सामाजिक क्षेत्र में सनातनी हिन्दू समाज को झकझोर

कर जगाने वाले क्रान्तिदर्शी महर्षि दयानन्द का प्रभाव पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बढ़ रहा था। चौधरी साहब को भी समाज में फैली कुरीतियाँ अत्यधिक उत्पीड़ित करती थीं, अतः आर्य समाज में व्याप्त समाज-सुधार की भावना और कार्यक्रम ने उन्हें अपनी ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के नियमित पठन-पाठन से और स्वामी दयानन्द की शिक्षा से क्रान्ति दृष्टि पाकर वे जीवन पथ पर धार्मिक चेतना एवं राष्ट्र उत्थान की ओर अग्रसर हुए। महात्मा गान्धी और महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व इस कृषक पुत्र के मन और मस्तिष्क में पूर्णतया छा गए और इन्हीं दोनों महापुरुषों की शिक्षा ने इनके जीवन का मार्ग प्रदर्शन किया। गाजियाबाद में चौधरी साहब आर्य समाज के मन्त्री बने। अपने कार्यकाल में एक अबला विधवा लड़की को जो एक दुराचारी अधिकारी की वासना का शिकार होने जा रही थी, प्रयत्न कर बचाया और पिता का दायित्व निभाते हुये सम्मान सहित विवाह करा कर उसका उद्धार किया। अपनी कर्मठता, कार्यकुशलता एवं राष्ट्र के प्रति अक्षुण्य आस्था के कारण चौधरी चरणसिंह धीरे-धीरे जन-मानस की चर्चा का विषय बन गए, छोटी सी वय में ही लोग उन्हें श्रद्धा समर्पित करने लगे और लोगों का अटूट विश्वास उन्हें मिलने लगा।

चौधरी साहब का व्यक्तित्व और पारिवारिक जीवन विशुद्ध भारतीयता से भरा हुआ है। उनका कृतित्व सरलता-सम्पन्न, दंभ से परे और मिथ्याभिमान से शून्य है। वे एक आदर्श पिता, आदर्श पति और सद्गृहस्थ हैं। वेदों की वाणी उनके अन्तर में गूँजती हैं। उसी के साथ उनका घर परिवार संचालित होता है। उनके छह बेटे-बेटियाँ हैं। आयुक्रम में सबसे बड़ी बेटी श्रीमती सत्या हैं, जिनके पति श्री गुरुदत्त सोलंकी इस समय उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य हैं। दूसरी कन्या श्रीमती वेद स्वयं डाक्टर हैं, जिन्होंने एम.बी.बी.एस. की डिग्री प्राप्त की है और संयोगवश उनके पति डा० जयपाल सिंह भी ख्यातिनाम डाक्टर हैं। तीसरी कन्या श्रीमती ज्ञान हैं जिनके पति श्री एस.पी. सिंह पुलिस कप्तान के पद पर आसीन हैं। चौथी बेटी श्रीमती सरोज हैं जिनके पति श्री एस. सी. वर्मा गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश में कार्यरत हैं। चौधरी साहब के एकमात्र पुत्र श्री अजीत सिंह इन्जीनियर हैं और उनकी पत्नी का नाम श्रीमती राधिका है। सबसे छोटी बेटी श्रीमती शारदा हैं जिनके पति श्री वासुदेव सिंह हैं जो अमरीका में पिट्सबर्ग में इंजीनियर हैं।

चौधरी चरणसिंह एक कुशल वकील, स्पष्ट वक्ता एवं सफल राजनीतिज्ञ हैं। समय के साथ-साथ उनका प्रत्येक चरण सफलता के सोपानों पर निरन्तर पड़ता रहा। वह प्रारम्भ से ही एक लोकप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ तथा ईमानदार राजनेता रहे हैं। उन्होंने सर्वप्रथम सन् १९३१ में मेरठ जिला बोर्ड के उपाध्यक्ष पद को संभाला और सन् १९३५ तक उक्त उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वे सन् १९२९ में सदस्य बने थे, सन १९४० से १९४६ तक उन्होंने जिला काँग्रेस कमेटी के महासचिव, अध्यक्ष एवंकोषाध्यक्ष के पद पर आसीन रहकर उसका कुशलतापूर्वक संचालन किया। वे शनैः शनैः प्रदेश और देश की राजनीति में अपने मूल सिद्धान्तों तथा विचारों की स्थिरता के साथ आगे बढ़ते रहे। उन्होंने अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी, प्रदेश की कार्य समिति और पार्लियामेन्ट्री बोर्ड में रह कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा 'सादा जीवन और उच्च विचार' के मूल मन्त्र से जन-मानस के हृदय-सम्राट बन गए और करोड़ों किसानों के मसीहा बन कर उनका मार्ग प्रदर्शन करने लगे।

राजनीति और प्रशासन

□ जयदेव शर्मा

देश को आजाद हुए तीस वर्ष हो गये। चौधरी चरण सिंह ७५ वर्ष के हैं। सन् १९३० में आजादी की लड़ाई में उत्तर प्रदेश के मेरठ-मण्डल को नेतृत्व देने वाले युवा चरणसिंह आज देश के कर्णधार हैं और पूरे देश की शान्ति-व्यवस्था, राष्ट्रीय अखण्डता, भावनात्मक एकता, सुःख और चैन का दुस्तर दायित्व उनके कन्धों पर है किन्तु लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरन्तर संघर्षशील जीवन के इस लम्बे अन्तराल में अपने आचार-विचार में अडिग बने रहना उन जैसे उदात्त चरित्र-नायक के लिये ही सम्भव है। आज के युग में आसक्तियों से बचकर रहना वास्तव में बहुत कठिन काम है और यह कठिन काम चरणसिंह के लिए कितना सरल है, यह उन लोगों को अच्छी तरह मालूम है, जिन्हें उनके निकट रहने और उनके साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला है।

सन् १९२८ में साईमन कमीशन के भारत में आगमन से और जलियाँवाला बाग की शहादत से सारे देश में राष्ट्र-स्वतन्त्रता के लिये जन-जागरण प्रबल हो उठा था। सन् १९२९ में कांग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव स्वीकृत किया और एक वर्ष का समय अंग्रेजों को अपनी मांग पूरी करने के लिये दिया किन्तु अंग्रेजों ने मांग को ठुकरा दिया और गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह प्रारम्भ किया। सरकार ने कांग्रेस को गैर कानूनी सस्था घोषित कर दिया। एक वर्ष के कठिन संघर्ष के उपरान्त, लार्ड इरविन ने गाँधी जी तथा कांग्रेस कार्य समिति के पांच सदस्यों को रिहा कर दिया। तत्पश्चात् गाँन्धी-इरविन पैक्ट के आधार पर अन्य बन्दियों को भी रिहा कर दिया गया। इसी समय कांग्रेस ने गोलमेज कान्फ्रेंस में सम्मलित होने की सहमति दी और गांधी जी को एक मात्र प्रतिनिधि बनाकर इंगलैंड भेजा लेकिन वहाँ भारत की स्वतन्त्रता की बात नहीं मानी गई। फिर संघर्ष प्रारम्भ हुआ; गांधी जी पुनः गिरफ्तार हो गये।

सन् १९३५ में 'गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट' स्वीकृत हुआ जिसमें राज्यों को प्रान्तीय स्वतन्त्रता दी गई थी जिसके आधार पर सन् १९३७ में राज्य विधान सभाओं के चुनाव घोषित हुए। इन चुनावों में पुराने जमींदारों और जागीरदारों की प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने कांग्रेस की तस्वीर को धूमिल करने के लिए षड्यन्त्र रचा। राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस चुनौती को स्वीकार किया और चुनाव लड़ने के लिये अपने उम्मीदवार खड़े किये। पहिली बार युवा नेता चरण सिंह को मेरठ जिले के छिपरौली क्षेत्र से कांग्रेस का टिकट दिया गया और उन्होंने हजारो मतो से अपने प्रतिद्वन्दी को हरा कर विजय श्री प्राप्त की। प्रदेश का नेतृत्व पं० गोविन्द बल्लभ पन्त के हाथ में आया और वे उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्य मन्त्री बने। चौधरी चरण सिंह ने अपनी वक्तृत्ता और सादे जीवन की छाप छोड़ी और प्रदेश के मानचित्र में मेरठ और चरण सिंह का नाम पर्यायवाची होकर उभर आया। अंग्रेजी शासक, कांग्रेस की बढ़ती शक्ति से भयभीत होने लगे, नौकरशाही को कांग्रेस-प्रशासन की नीतियों का प्रति-

प्रतिपादन न करने के गुप्त आदेश थे और इसी समय हिटलर ने द्वितीय महायुद्ध छेड़ दिया। गाँधी जी ने अंग्रेजों से कहा कि वे भारत को आज़ाद करें, तो आजाद भारत युद्ध में उनका साथ दे सकता है। यह बात मानी नहीं गई और गाँधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। विनोबाभावे को उन्होंने पहला सत्याग्रही घोषित किया। 'इस लड़ाई में तन, मन, धन से सरकार की मदद करना हराम है' का नारा गूँजने लगा।

चौधरी चरणसिंह की प्रखर-प्रतिभा और राजनीतिक विचारधारा को प्रस्फुटित होने का एक सुअवसर और मिला, संपूर्ण मेरठ मंडल में उनका यश छा गया। कांग्रेस को एकबार फिर उनकी संगठन-क्षमता, नेतृत्व-कौशल और वक्तृत्वशक्ति का परिचय मिला। संपूर्ण मण्डल को उन्होंने अपने व्यक्तित्व से इतना अनुप्राणित किया कि हजारों व्यक्ति इस संघर्ष में कूद पड़े और चरणसिंह के साथ जेल की चहार-दीवारी में बन्द हुए।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सारा देश अपनी स्वाधीनता के लिए सघर्ष कर रहा था। अंग्रेजों ने भारत पर अपना शिकंजा मजबूत रखने के लिए भेदभाव और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने की नीति अपना ली थी। एक ओर वे मुसलमानों को राष्ट्रीय आन्दोलन से विरत रखने के लिए मुस्लिम लीग और मोहम्मदअली जिन्ना को प्रोत्साहन दे रहे थे और दूसरी ओर हरिजनों तथा अनुसूचित जातियों के नेतृत्व के लिए डा० अम्बेदकर को कांग्रेस के विरुद्ध उकसा रहे थे। ऐसी परिस्थिति में राष्ट्रीय कांग्रेस ने 'करो या मरो' का नारा दिया। सन् १९४२ की ८ अगस्त को महात्मा गाँधी के सहित देश के शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। उसी दिन मेरठ में पुनः चौधरी चरणसिंह को भी गिरफ्तार किया गया। वार्तायें चलती रहीं, क्रिप्स मिशन आया और दुनिया के इस प्रख्यात कूट-महारथी को अपना-सा मुँह लेकर लौट जाना पड़ा। गाँधी के सत्य और अहिंसा के सामने गौरांग महाप्रभुओं की कुटिलता ने घुटने टेक दिये। विश्वयुद्ध के विजेताओं को भारत-भूमि में पराजय का मुँह देखना पड़ा। बावेल प्लान बना और सन् १९४६ में प्रान्तीय धारा सभाओं के चुनाव आयोजित किये गये। चौधरी चरणसिंह छिपरौली से पुनः निर्वाचित हुए। उत्तर प्रदेश में पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार बनी, जिसमें चौधरी चरणसिंह, लालबहादुर शास्त्री, चन्द्र-भानु गुप्त, सभा-सचिव (पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी) के रूप में सम्मिलित किये गये। पाँच वर्ष तक सभा-सचिव के रूप में उन्हें प्रान्तीय प्रशासन को देखने-समझने का अवसर मिला। उनकी प्रशासनिक क्षमता, कर्तव्यपरायणता, कार्यकुशलता की कीर्ति बढ़ने लगी। १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत ने स्वतन्त्रता की नई किरण देखी। सम्पूर्ण देश गुलामी की छटपटाहट से मुक्त हो गया।

शक्ति प्राप्त करते ही श्री चरणसिंह के सामने जमींदारों, ताल्लुकेदारों, सामन्तों और सरकारी कानूनों के शिकंजे में कसे हुए कराहते किसानों, मजदूरों और मजलूमों पर ढाये जा रहे एक-से-एक वीभत्स जुल्मों के दृश्य बिजली की तरह कौंध गये। उन्होंने इस उत्पीड़न को जड़ मूल से विनष्ट करने का बीड़ा उठा लिया। उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन और भूमि-सुधार कानून बनाकर एक श्रेष्ठतम क्रान्ति का श्रीगणेश किया। जमींदारी-प्रथा समाप्त हुई और गाँवों के किसानों ने एक नये सूर्योदय के दर्शन किये। किसानों को जमींदारों के शोषण से मुक्ति देकर उन्हें भूमि-धर बनाने के इस क्रान्तिकारी कदम से चौधरी साहब की ख्याति सम्पूर्ण देश में फैल गयी।

एक सामान्य भारतीय कृषक-परिवार में जन्म लेने और ग्रामीण वातावरण से आकर्षित होने के कारण चौधरी साहब को गाँवों की समस्याओं की गहरी जानकारी है। साथ ही वह एक अच्छे विद्या-व्यसनी और अध्यवसायी व्यक्ति हैं। जब उनके समवयस्क नेतागण सत्ता प्राप्ति की होड़ में लगे थे, तब चरणसिंह जी प्रशासनिक बारीकियों को समझने, सैकड़ों वर्षों की दासता से मुक्त देश की गरीब जनता को नवोन्मेषशाली योजनायें देने की कल्पना में डूबे हुये थे। उनकी प्रतिभा और क्षमता से प्रभावित होकर जून १९५१ में पन्त जी ने उन्हें अपने मन्त्रि मंडल में सूचना एवं न्याय मन्त्री का पदभार सौंपा और तीन महीने बाद कृषि मन्त्रालय भी उनके हवाले कर दिया।

चौधरी चरणसिंह का जीवन अद्यतन उन असाधारण देश-सेवाव्रती लोगों का-सा जीवन रहा है जो सतत् संघर्षशील

रहे, सिद्धान्तों और आदर्शों के लिए जिये और मरे। दोहरे रूप में जीना उन्होंने कभी पसन्द नहीं किया। महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों को एकबार स्वीकार कर लेने के बाद वे आज तक उनसे विचलित नहीं हुए, जब कि गाँधी जी के देखते-देखते ही उनके उत्तराधिकारियों ने उनके सिद्धान्तों और आदर्शों को तिलान्जलि देना शुरू कर दिया था। अधिकार सुखों की मादकता ने उन्हें विवेक-शून्य कर दिया था। एक सुसम्पन्न और सुसंस्कृत राष्ट्र के निर्माण की कल्पना को व्यक्तित्व निर्माण का कार्यक्रम बना दिया गया था। सैकड़ों वर्षों की दासता से मुक्त करोड़ों विभिन्न नागरिकों को अपने भाग्य का निर्माण करने के योग्य बनाने के बजाय वे स्वयं उनके भाग्यविधाता बन गये। देश की इन तथाकथित महान् विभूतियों के बीच चौधरी चरणसिंह उन गिने-चुने व्यक्तियों में रह गये, जो इस आँधी में गाँधी के सिद्धान्तों की मशाल जलाये हुए थे।

एक सद्यः स्वतन्त्र राष्ट्र की जन-आकांक्षाओं की पूर्ति की दिशा में चौधरी साहब अडिग होकर सतत् प्रयत्नशील रहे हैं। वह प्रान्तीय प्रशासन के जिस विभाग के मन्त्री बने उसे उन्होंने न केवल चुस्त किया, अपितु उसे सामाजिक क्रान्ति का एक मोर्चा बना दिया। क्रान्ति केवल अच्छे आचरण वाले क्रान्ति दृष्टा ही करते हैं, सरकारें क्रान्ति नहीं करतीं और न कानून बना देने से ही क्रान्ति हो जाती है। सत्ता के संघर्ष से जन्मी राजनीति एवं अनैतिकता ने जनता के सामने चरणसिंह जी की चाहे जैसी तस्वीर बनाई हो, उन्होंने उसकी कभी चिन्ता नहीं की। आत्म-प्रचार के कौशल से वह सदैव अनभिज्ञ रहे और घोर आलोचनाओं का सामना करते हुए सत्य के लिए निरन्तर संघर्षशील रहे।

भारतीय संविधान के अन्तर्गत सन् १९५२ में भारतीय गणराज्य के प्रथम चुनाव हुए। अपने पुराने चुनाव क्षेत्र छिपरौली से वह पुनः भारी बहुमत से विजयी हुए। उत्तर प्रदेश मन्त्रिमण्डल का गठन हुआ और उन्हें राजस्व एवं कृषि मन्त्री पद का भार सौंपा गया। किसान के बेटे की रुचि के अनुकूल ही दायित्व मिला। पदासीन होते ही कृषि उन्नयन के कार्य में जुट गये। रात-दिन अथक परिश्रम कर कृषि-भूमि के सुधार एवं फैलाव की उन्होंने अनेक योजनायें बनायीं और सफलता से उनका संचालन किया। चौधरी साहब की कार्य-कुशलता, तीक्ष्ण बुद्धि एवं विषयगत ज्ञान के कारण उनका जनता के साथ-साथ अफसरशाही पर भी विशेष प्रभाव पड़ा। जिनके मन मैले थे, वह उनसे थर-थर कांपने लगे। भ्रष्ट आचरण के प्रति कठिन रुख अपनाने वाले चौधरी साहब के स्वच्छ प्रशासन की चर्चा घर-घर होने लगी। ठीक समय से वह कार्यालय पहुँचते और अन्य कर्मचारियों को भी अनुप्रेरित करते। अपने कर्त्तव्यों के प्रति अपूर्व निष्ठा ने उन्हें कुशल प्रशासक का रूप सौंपा। 'कर्मण्ये-वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का मूल मन्त्र लेकर चौधरी साहब निरन्तर कर्मरत रहते। सच्चाई और ईमानदारी उनके जीवन का एक अंग बनकर उभरने लगी। कृषि मन्त्री एवं राजस्व मन्त्री दोनों का ही पदभार उन्होंने पूर्ण दक्षता से प्रतिपादित किया। प्रदेश की समृद्धि, कृषि-शक्ति का विकास उनके जीवन की साध थी, तो भ्रष्टाचार उन्मूलन उनके जीवन का उद्देश्य।

मिटती हुई सामन्तशाही ने अपने बचाव के लिए पटवारियों की शरण ली। उस समय पटवारी ही किसान का भाग्यविधाता होता था। एक ओर अनपढ़ किसान और दूसरी ओर सम्पूर्ण अधिकार सम्पन्न पटवारी; शोषण की यह विसंगति भयावह हो उठी थी। पटवारी की कलम 'चित्र-गुप्त की कलम थी', वह जो लिख देते थे वही ब्रह्मा का लेख हो जाता था। उनके लेख को उच्च से उच्च अधिकारी भी नहीं काट सकता था। उन्हें किसानों को दण्डित करने का भी अधिकार था। फलतः उनकी स्वार्थ-लोलुपता और मनमानी चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। गरीब किसान उनके जुल्मों के शिकार थे। वे जिसे चाहते घर बैठे ही भूमि का मालिक बना देते। जमींदारों से उनकी साँठ-गाँठ थी। किसानों से ये मनमाना पैसा वसूल करते थे, जिसे 'जाफा' कहा जाता था। चौधरी साहब इनकी करतूतों से भलीभाँति परिचित थे। अतः शक्ति सम्पन्न होते ही उन्होंने इनके अधिकारों में कटौती कर दी और इन पर कड़े प्रतिबन्ध लगा दिये, जिससे ये लोग किसानों को उत्पीड़ित न कर सकें।

चौधरी साहब द्वारा लिये गये इस अनुशासनयुक्त निर्णय से पटवारी तिलमिला उठे। उन्हें अपना भविष्य अन्धकार-पूर्ण दिखायी देने लगा। सबने एकजुट होकर संगठित रूप

से त्याग-पत्र दे दिया। पटवारियों को विश्वास था कि उनके मायाजाल को न कोई समझ सकता है और न कोई सँभाल सकता है। चौधरी साहब ने उन्हें चेतावनी दी, किन्तु वे अपनी हठधर्मी पर डटे रहे। उन्हें पूरा विश्वास था कि सरकार को उनके सामने घुटने टेकने पड़ेंगे, किन्तु चौधरी साहब के दृढ़ निश्चय ने उनका साहस तोड़ दिया। चौधरी साहब ने पटवारियों के हजारों त्याग-पत्र स्वीकार करते हुए उनके स्थान पर लेखपालों की नियुक्ति कर दी। घोर उत्पीड़न और शोषण की सदियों से चली आ रही यह क्रूर कहानी समाप्त हुई। पटवारी के अस्तित्व के साथ-साथ 'पटवारी' शब्द ही राजतंत्र से तिरोहित हो गया। पटवारियों का स्थान लेखपालों ने ले लिया, जो सभापति एवं ग्राम समाज के निर्देशन में सुचारु रूप से कार्य करने लगे।

जमींदारी उन्मूलन के उपरान्त पटवारी उन्मूलन उत्तर प्रदेश में ही नही, अपितु सम्पूर्ण देश के इतिहास में किसानों के हितों की रक्षा के निमित्त लिए गये निर्णय का वह कीर्तिमान बन गया, जो सदैव अमर रहेगा और चौधरी चरणसिंह गरीब किसानों के उद्धारक के रूप में उसी तरह याद किये जायेंगे जैसे ग्राह से गज के उद्धारक विष्णु किये जाते है ।

सन् १९५४ में योजना आयोग ने यह निर्देश दिया कि जिन जमींदारों के पास खुद काश्त के लिए भूमि नहीं थी, उनको अपने असामियों से ३० से ६० एकड़ तक भूमि वापस लेने का अधिकार मान लिया जाये। अन्य प्रदेश में इस सुझाव की आड़ में जमींदारों ने काविज काश्तकारों से जो अधिकांश हरिजन और निर्बल वर्ग के थे, भूमि छीन ली। उत्तर प्रदेश में चौधरी चरणसिंह के हस्तक्षेप से इस सुझाव को नहीं माना गया और यहाँ के गरीब सीरदारों को बड़ी राहत मिली। जमींदारी उन्मूलन एक्ट सन् १९५६ में उनकी प्रेरणा से यह संशोधन भी किया गया कि कोई सीरदार भूमि से वंचित नहीं किया जायेगा, जिसका कब्जा भूमि पर होगा, चाहे किसी रूप में भी उसका कब्जा क्यों न हो। इसका सबसे अधिक प्रभाव हरिजनों पर पड़ा, जो गरीबी के कारण भूमिधर नहीं बन पाये थे और बंजर जमीनों को जोत के लिए तैयार कर उस पर काबिज थे।

प्रशासनिक कार्यों में निरन्तर व्यस्त रहते हुए भी चौधरी साहब स्वाध्याय में अनवरत रूप से लगे रहते हैं। सहकारी कृषि एवं जमींदारी उन्मूलन पर उन्होंने एक अमूल्य पुस्तक लिखी, जिसकी सराहना सम्पूर्ण विश्व में की गयी। अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने उत्तर प्रदेश में किये गये सुधारों एवं तत्सम्बन्धी योजनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। चौधरी साहब मौलिक चिन्तक एवं स्वस्थ-विचारयुक्त व्यक्ति हैं। सन् १९५४ से १९५९ तक वे राजस्व और विद्युत विभाग के मन्त्री रहे तथा दो वर्ष तक परिवहन मन्त्री भी रहे।

स्वतन्त्र विचारक एवं स्पष्ट वक्ता होने के कारण वे जनता के हितों के लिए सामने आकर निर्भय होकर सीधी लड़ाई मोल लेते रहे और संघर्ष करते रहे। सन् १९५९ में नागपुर काँग्रेस सम्मेलन में 'सहकारी खेती' को लेकर उन्होंने तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रस्ताव का डटकर विरोध किया। गरीब किसानों की दशा सुधारने के लिए वह उस असाधारण हस्ती से टकरा गये, जिसके समक्ष बात कहने में भी लोगों के गले अवरुद्ध हो जाया करते थे।

गाँधी जी की निर्भीकता उनके लेखन एवं वाणी में सहज रूप से विलास करती रही। मन्त्रिमण्डल के निर्णय के बाद बिड़ला उद्योग हिन्दुस्तान आलमुनियम को सस्ती दर पर बिजली दिये जाने के कारण राज्य सरकार को ढाई करोड़ रुपये की धनराशि का घाटा उठाना पड़ रहा था। चौधरी साहब ने इस असहनीय स्थिति से क्षुब्ध होकर अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया । जो कुर्सी देश का, समाज का, मानवता का हित न कर सके उस कुर्सी से चिपके रहना उन्हें कभी प्रिय न था। जब-जब उन्हें अपने आदर्श उपेक्षित होते दिखाई दिये, उन्होंने इस्तीफा दे दिया। कुर्सी को छोड़ते रहे, किन्तु आदर्शों को नहीं छोड़ सके। चौधरी साहब अनुशासन के लिए भी प्रसिद्ध हैं। अनुशासित जीवन ही किसी राष्ट्र की उन्नति का मुख्य आधार होता है। प्रशासनिक ज्ञान के अभाव में कोई भी व्यक्ति मन्त्री के रूप में सफल नहीं हो सकता। उत्तर प्रदेश सरकार ने उनकी प्रशासनिक क्षमता को स्वीकार करते हुए सन् १९६० में उन्हें गृहमन्त्री का पद सौंपा। गृह विभाग के साथ-साथ कृषि विभाग का पूरा दायित्व चौधरी साहब पर ही था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री चरणसिंह जिस विभाग

में चरण रखते वहाँ स्वच्छ प्रशासन की स्थापना करते हुए नये कीर्तिमान स्थापित कर देते।

गृह मन्त्री का कार्य-भार संभालते ही चौधरी साहब ने पुलिस सेवाओं को पुनः संगठित किया। हेड कान्स्टेबिल और सब इन्पेक्टर के बीच ए० एस० आई० का एक नबीन पद सृजन किया जिसे विभागीय पदोन्नति द्वारा भरे जाने की व्यवस्था की। फलतः अत्यन्त लगन से काम करने वाले सत्य निष्ठ, ईमानदार, कर्त्तव्यपरायण हेड कान्स्टेबिल पदोन्नति पाने के अधिकारी हो गये।

चम्बल के बीहड़ों का उन्होंने पैदल चल कर दौरा किया और पुलिस कर्मचारियों की कठिनाइयों का अनुभव किया। आगरा, इटावा आदि दस्यु-पीड़ित क्षेत्रों में उन्होंने पद-यात्रा करते हुए दस्युओं पर आक्रमण का जाल बिछाने वाले बहादुर निर्भीक सिपाहियों की कठिनाइयों एवं उनकी मृत्यु की सम्भावनाओं का निरीक्षण कर, चम्बल घाटी में कार्यरत पुलिस कर्मचारियों की मृत्यु के उपरान्त भी पूर्ण पेन्शन दिये जाने की व्यवस्था की। पुलिस सेवाओं को शीघ्रातिशीघ्र समाज की सेवा के लिए उपयोगी बनाने के लिए उन्होंने कन्ट्रोल रूम एवं त्वरित गति से मिलने वाली सुविधाओं को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। वायरलेस लगी हुई गाड़ियाँ, घटना-स्थल पर तुरन्त पहुँचने वाली पेट्रोल गाड़ियाँ भ्रमण करने वाले दस्तों आदि की सुन्दर व्यवस्था की। प्रत्येक थाने पर जीप आदि अन्य साधनों की व्यवस्था की। पुलिस के छोटे-छोटे सिपाही उनके कार्य-काल में गर्व का अनुभव करते थे।

सन् १९६३ से १९६५ तक चौधरी साहब वन विभाग एवं कृषि विभाग के मन्त्री रहे थे। सन् १९६५ से सन् १९६७ तक वन एवं स्वायत्त शासन विभाग के मन्त्री रहे। कांग्रेस और शासन में रहते हुए भी वह निरन्तर संघर्षरत रहे। फलतः उन्होंने समय-समय पर पाँच बार इस्तीफे दिये और अन्त में काँग्रेस की नीतियों में व्याप्त स्वार्थपरता, अगाँधी-वादी विचारधारा एवं कुटिल प्रवृत्तियों से क्षुब्ध होकर पहली अप्रैल सन् १९६७ में कांग्रेस से ही इस्तीफा दे दिया। उनके १६ सहयोगियों ने उनका साथ दिया। उनकी दृष्टि में दल नहीं राष्ट्र सर्वोपरि है। अदम्य उत्साह एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी चौधरी साहब संयुक्त विधायक दल के नेता चुने गए। अपने लम्बे अनुभव एवं प्रशासनिक क्षमताओं के कारण अप्रैल सन् १९६७ को वह प्रदेश के मुख्य मन्त्री बने। विभिन्न पार्टियों के ताल-मेल से बनी यह सरकार विचारों में एकरूपता ला पाने में असमर्थ सिद्ध हुई। अतः कुर्सी पर मुख्य मन्त्री बनकर निरर्थक शोभायमान होना चौधरी साहब के चरित्र के विरुद्ध था। जन सेवा के चिर उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा पड़ते देख कर उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू किये जाने की सिफारिश की। इसी बीच उन्होंने एक सबल विरोधी पक्ष तैयार करने की कल्पना से 'भारतीय क्रांति दल' की स्थापना की, जो उनके विचारों के अनुरूप एवं गाँधी के आदर्शों का हामी था; जो गाँधी की तरह कृषि और कुटीर उद्योगों के माध्यम से देश को समृद्धिशाली बनाने में विश्वास करता था।

सन् १९६९ की फरवरी के चुनावों में चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में भारतीय क्रांतिदल एक सशक्त शक्ति के रूप में विधान सभा के चुनाव में उभर कर आया। उसके ९८ प्रत्याशी विजयी हुए। कांग्रेस को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हो सका। लेकिन विधायकों की भारी तोड़-फोड़ के बाद श्री चन्द्रभानु गुप्त के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की सरकार बनी और भारतीय क्रांतिदल को मुख्य विरोधी दल की भूमिका अदा करनी पड़ी। मई सन् १९६९ में भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन का देहान्त हो गया और नए राष्ट्रपति के प्रश्न पर देश की राजनीति ने नया मोड़ ले लिया। काँग्रेस दो गुटों में विभाजित होने की ओर अग्रसर हो गई।

राष्ट्रपति पद के लिये तीन उम्मीदवार खड़े हुए। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने एक ओर श्री नीलम संजीव रेड्डी का नाम प्रस्तावित किया दूसरी ओर अपने गुट की पूरी शक्ति के साथ स्वतन्त्र उम्मीदवार श्री वी० वी० गिरि का ससर्थन प्रारम्भ कर दिया। संगठन कांग्रेस ने और काँग्रेस के पुराने नेताओं ने श्री नीलम संजीव रेड्डी का समर्थन किया तथा देश के स्वतन्त्र विचारकों ने श्री चिन्तामणि देश मुख का। भारतीय क्रांतिदल ने श्री देशमुख को समर्थन देने का निर्णय किया और भारतीय क्रांतिदल के सदस्यों द्वारा